शोध पात्रता प्रवेश परीक्षा (RET) पाठ्यक्रम–2017

विषय – संस्कृत शोध पद्धति

प्रथम खण्ड

इकाई–I

(1)–शोध की अवधारणा – अनुसन्धान, शोध, अन्वेषण, गवेषणा, अनुशीलन, खोज, मीमांसा, सर्वेक्षण आदि।

(2)–शोध का स्वरूप – व्याप्ति, अर्थ एवं परिभाषा।

(3)–शोध का महत्व – औचित्य

(4)–शोध के प्रयोजन– ज्ञान की सीमा का विस्तार, वैज्ञानिक पद्धति का निर्धारण और प्रशिक्षण, अर्थ–प्राप्ति, कीर्तिकामना, शुद्ध सत्यान्वेषण की अदम्य लालसा की तृप्ति।

(5)–शोध का उद्देश्य एवं लक्ष्य –मौलिक एवं उच्चतम नवीन तथ्यों का उद्घाटन, किसी निर्णय को निश्चित् करना, मानवीय चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास और परिष्कार, अज्ञात सत्य की खोज करना, भौतिक और मानसिक कल्याण, विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति और ज्ञानक्षेत्र की सीमा का विस्तार, विश्रृंखलित तथ्यों का संयोजन, समस्याओं का समाधान, अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण, उपलब्ध तथ्यों और सिद्धान्तों की पुनः स्थापना, मौलिकता का प्रतिपादन, वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण।

इकाई–II

(6)–शोध प्राक्कल्पना (परिकल्पना) Hypotheris – विषय चयन – विषय की उपयुक्ता, अन्वेषक की रूचि, अन्वेषक के ज्ञान की परिधि, और क्षमता, सामग्री की सुलभता, निर्देशक की योग्यता तथा विषय की उपयोगिता प्राक्कल्पना–पूर्व कल्पना, सामग्री संकलन, निष्कर्ष।

(7)–प्राक्कल्पना निर्माण प्रक्रिया – तथ्य सिद्धान्त और प्राक्कल्पना सिद्धान्त, स्थिति, आवश्यकता, क्षेत्र, उपयोगिता एवं महत्त्व, अपेक्षित गुण, सावधानियाँ।

(8)–शोध के साधन –प्रक्रिया–(i) कलात्मक–चित्रमूर्ति मानस स्वरूप–अंकन (कल्पना) (ii) वैज्ञानिक–तथ्यों का संग्रह एवं संयोजन।

प्रविधि–निरीक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सांख्यशास्त्रीय, प्रयोजन, ग्रन्थालय, सामग्री, पत्र–पत्रिकाएं, ध्वनि–मुद्रण, चित्रीकरण, इण्टरनेट।

तथ्य – भाष्य, वार्तिक, टीका, विवरण,वृत्ति।

इकाई–III

(9)–शोध पद्धति (Methodology) – तुलनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, सर्वेक्षणात्मक।

(10)–शोध की प्रकृति एवं प्रभाव (Nature and Effect) – प्राकृतिक प्रभावगत –सजातीय, विजातीय जीवनवृत्तीय–आलेचनात्मक, भावतत्त्व, कल्पनातत्त्व, शैलीतत्त्व, विचारतत्त्व प्रवृत्तिगत –परम्परागत, नवीन।

क्रमशः.....2

इकाई–IV

(11)–शोध के भेद – उद्देश्य, कला और प्रयोग, सिद्धान्त निर्माण व्यावहारिक अनुप्रयोग।
काव्यरूप/साहित्यिक/काव्यानुसन्धान, शास्त्ररूप/ शास्त्रानुसन्धान, पुराण या इतिहास रूप/ऐतिहासिक, दर्शनपरक/ दार्शनिक/ मीमांसा, भाषाशास्त्रीय/भाषा वैज्ञानिक/ध्वनिविज्ञान।

(12)–शास्त्रीय अनुसन्धान – साहित्यिक – साहित्यशास्त्रीय – वैचारिक परिस्थितिगत और दार्शनिक।
काव्यशास्त्रीय – भारतीय – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
पाश्चात्त्य –प्लेटो, अरस्तू इति।
वैज्ञानिक –ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ, लिपि, शैली आदि।

इकाई–V

(13)–शोध सम्बन्धित साहित्य सामग्री संग्रह – प्रकाशित साहित्य, हस्तलिखित, शिष्ट गद्य–पद्य, लोकसाहित्य–गद्य, पद्य, मौलिक ग्रन्थ–गद्य एवं पद्य।
सावधानियाँ –अनिवार्य, सहायक एवं उपकारक। मुद्रित, अमुद्रित, शिलालेख, शोधकाव्यग्रन्थ, काव्यशास्त्र, इतिहासादि।

(14)–शोध के विविध क्षेत्र – विशिष्ट कालखण्ड का अध्ययन – परम्परा, परिस्थिति और प्रकृति, साहित्यिक/रचनाकार का अध्ययन, साहित्यकार का जीवन–परिचय, व्यक्तित्व, कर्तृत्व, तत्कालीन परिस्थिति का प्रभाव, अन्तरंग–बहिरंग परीक्षण, देशी–विदेशी भाषा, मतवाद का प्रयोग।
बिशिष्ट साहित्य विधा – नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबन्ध।
विविध साहित्य सम्प्रदाय –उद्भव, विकास, उद्भव के कारण, प्रभाव, प्रवर्त्तक, समर्थक, विशेषता, परिस्थितियों का प्रभाव, लेखक, कवि।
रचना आदि–पृष्ठभूमि, कालखण्ड, कथानक, उद्देश्य।

(15)–शोध विधि – प्रहेलिका, सूत्र, व्युत्पत्ति, कथा एव आख्यान (उपदेशात्मक आख्यान, कार्यकारणता के प्रतिपादन के लिये आख्यान, व्यङ्य कथन के लिये आख्यान, अर्थवाद के प्रतिपादन हेतु आख्यान) दृष्टान्त विधि, समन्वय विधि, आत्मोक्ति विधि, प्रयोजन विधि, प्रतिगमनविधि, व्याख्यात्मक विधि, संवाद विधि।

इकाई–VI

(16)–अनुसन्धाता के बिशिष्ट गुण –प्रबल जिज्ञासा, अनुकूल मनोवृत्ति एवं अभिरूचि, समुन्नत बौद्धिक स्तर, प्रतिभा कारयित्री (कवियों एवं रचनाओं की) ग्राहयित्री (समालोचकों और व्याख्याकारों की), लगन, तत्परता और सहिष्णुता।

(17)–अनुसन्धान के हेतु – प्रतिभा– कारयित्री और भावयित्री, निपुणता–नैपुण्य, अभ्यास–पुनः पुनः श्रवण मनन और निदिध्यासन।

क्रमशः.....3

(18)–अनुसन्धाता की योग्यता – शैक्षिक योग्यता, जिज्ञासा–उत्कट अभीप्सा रूचि और तत्परता, गृहीत विषय का ज्ञान, ज्ञान के विस्तार की उत्कट अभिलाषा, कार्यसंलग्नता एवं धैर्यशीलता, दृढइच्छाशक्ति, श्रमशीलता एवं तार्किकता, निरपेक्षता एवं विषयपरकता, सारग्राहिता एवं लेखन क्षमता, कृतज्ञता एवं निष्काम कर्मठता, तटस्थता, स्वाध्यायशीलता– आवृत्त सत्य को जानने की अभिलाषा, शड्.काशीलता, वैचारिक स्पष्टता एवं निर्णयात्मकता, वैज्ञानिक–दृष्टिकोण, क्षमता एवं सामर्थ्य, स्वास्थ्य एवं बाह्य परिस्थितियों की अनुकूलता, भाषा एवं अभिव्यक्ति पर अधिकार।

(19)–अनुसन्धाता की दृष्टि – आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, ज्ञानी (श्रद्धा, संयम और तत्पर) विषय–निर्वाचन, विषय–विश्लेषण, शिल्प–विधि, पुस्तकालय, निर्देशन, व्यवस्था और निर्देशक–प्रशिक्षण केन्द्र।

(20)–निर्देशक के गुण – शैक्षिक योग्यता, रूचि एवं तत्परता, निर्दिष्ट विषय का सामान्य ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टि, स्वाध्यायशीलता, युक्तिमत्ता, भाषा एवं विषय का उचित ज्ञान, तटस्थता।

(21)–अनुसन्धाता एवं निर्देशक में समन्वयन – प्रस्तावित शोध की रूपरेखा–समस्या, आवश्यकता, उपलब्ध साहित्य, उपयुक्त पद्धति, अध्यायों का वर्गीकरण, शोधकार्य की प्रमुख उपलब्धियाँ तथा समसायियक उपयोगिता, ग्रन्थसूची इत्यादि।

उक्त दोनों के संयुक्त तत्त्वावधान में तैयार कर शोध–विकास समिति के समक्ष प्रस्तुतीकरण के बाद निर्णय।

इकाई–VII

(22)–शोध–प्रबन्ध के प्रमुख भाग –शीर्षक – संक्षिप्त रूप में।

पूर्वानुबन्ध – प्राक्कथन, विषय–सूची आदि।

मध्यानुबन्ध –शोध–प्रबन्ध का मुख्य भाग।

पश्चानुबन्ध –परिशिष्ट, ग्रन्थसूची (अकारादि क्रम से)

(23)–मुख्यकलेवर – मुख–पृष्ठ, प्राक्कथन, भूमिका, प्रस्तावना, उपक्रमाध्याय, अथवा प्रारभिक अध्याय, संकेत–सूची अथवा संक्षेप–सूची, विषय–सूची रूपरेखा, मुख्य विषय विवेचन सम्बन्धी अध्याय, अनुक्रमणिका–आवश्यक शब्दों या विषयों या उद्धरणों से, ग्रन्थ–सूची, शोध–पत्र–पत्रिका सूची इत्यादि।

(24)–शोध कार्ड– शीर्षक, उपशीर्षक, ग्रन्थ संदर्भ, अवतरण, टिप्पणी, प्रतिपादन में तुलना, समीक्षा निष्कर्ष। कार्ड पद्धति – अध्याय एवं शीर्षक

नोट्स –प्रत्येक अध्याय के शीर्षक, उदधृत अंशों का सत्यापन।

(25)–सामग्री स्रोतों एवं सन्दर्भों का प्रस्तुतीकरण – संदर्भ संकेतों के पुनः पुनः प्रयोग हेतु नवीन विकसित संकेत सारिणी, आवश्यक सूचना हेतु पाद टिप्पणी, पारिभाषिक एवं लाक्षणिक प्रयोग के लिये परिशिष्ट।

क्रमशः.....4

(26)–शोध प्रबन्ध की भाषा – प्रांजल, सुबोध, शास्त्रीय, लाक्षणिक, सन्तुलित और वैज्ञानिक तथा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध और परिनिष्ठित।

(27)–साहित्यिक आलोचना – कृति का अर्थ, कृति की व्याख्या, निष्कर्ष एवं मूल्याकंन इत्यादि।

****

शोध पात्रता प्रवेश परीक्षा (RET) पाठ्यक्रम–2017
विषय – संस्कृत
द्वितीय खण्ड
इकाई–I

ऋग्वेद–वरूणसूक्त (1.25) सूर्यसूक्त (1.115), उषस्सूक्त (3.61) पर्जन्य (5.83), सरमा–पणिसंवाद (1.108), अथर्ववेद–राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29) तथा काल (19.53), शुक्ल यजुर्वेद अध्याय 32 1–5 ऋग्वेदभाष्यभूमिका–सम्पूर्ण, ऋग्वेद–इन्द्रसूक्त (1.32), अश्विनौसूक्त (1.116), अग्निसूक्त (1.143), सवितासूक्त (4.45), नासदीयसूक्त (10.129), अथर्ववेद–कालसूक्त (10.53), ऋग्वेद संहिता–विश्वेदेवाःसूक्त (1.89), विश्वामित्र–नदी संवादसूक्त (3.33), इन्द्रसूक्त (6.27), अग्निसूक्त (7.4), सोमसूक्त (8.48), शुक्लयजुर्वेद– माध्यन्दिन संहिता–प्रथम अध्याय, अथर्ववेद संहिता–दीर्घायुःप्राप्ति सूक्त (2.4), कृषिसूक्त (3.17), ब्राह्मणस्पति (2.23), सवितृ सूक्त (5.82), आप्रीसूक्त (7.2), इन्द्रावरूणसूक्त (7.83), ज्ञानसूक्त (10.71), शुक्लयजुर्वेद–मध्यन्दिनसंहिता–द्वितीय अध्याय, अथर्ववेद संहिता–शालानिर्माणसूक्त (3.12), वनस्पति सूक्त, कृषिसूक्त (8.56), ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पंचिका, 1–3 अध्याय। वैदिक यज्ञ एवं पारिभाषिक शब्द सामान्य परिचय, शतपथ ब्राह्मण–प्रथमकाण्ड– 1–3 अध्याय। अर्थसंग्रह वैदिक यज्ञ एवं पारिभाषिक शब्द परिचय, ऋक्प्रातिशारव्य, 1–3 पटल, निरूक्त, (1, 2 एवं 7वॉ अध्याय) बृहद् देवता–प्रथम अध्याय, पारस्करगृह्यसूत्रम्–प्रथम काण्ड 1–12 कण्डिका, सिद्धान्तकौमुदी–स्वर वैदिक प्रकरण से निम्नलिखित सूत्र–धातोः (6.1.162), अनुदात्ते च (6.1.190) लिति (6.1.193) कर्षात्वतो¥ोऽन्त उदात्तः (6.1.159), समासस्य (6.1.223) बहुब्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1) दायाद्यं (6.2.5), तिङ्. ङ.तिङः (8.1.28), नालुट् (8.1.29), गतिर्गतौ (8.1.70) तिङि.चोदात्तवति (8.1.71), वैदिक छन्दो का सामान्य परिचय मूल सात छन्द–गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, बृहती, पंक्ति। वैदिक व्याकरण–वैदिक शब्दरूपों की विशेषताएं, तुमर्थक् प्रत्यय, लेट् एवं लुङ्. लकारों के भेद उपनिषद्– तैत्तिरीयोपनिषद्– शीक्षाबल्ली।

इकाई–II

व्याकरण

तिङ.न्त–भ्वादिगण की भू एवं एध् धातु तथा शेषगणों की प्रथम–प्रथम धातुओं की रूपसिद्धि। कृदन्त णिजन्त, सन्नन्त, यङ्.लुक् नामधातु–पुत्रीयति, कृष्णति, शब्दायते, आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म, भूयते, कर्मकर्तृ, लकारार्थ। तद्धित–अपत्यार्थ, रक्ताद्यर्थ, चातुरर्थिक, शैषिक, भावकर्माद्यर्थ, भवनादि, मत्वर्थीय, प्राग्विदशीय प्रगिवीय। सिद्धान्तकौमुदी– कारकप्रकरण। वरदराजाचार्य–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, प्रारम्भ से भ्वादि पर्यन्त वरदराजाचार्य–मध्यसिद्धान्तकौमुदी–भ्वादि के पश्चात् सम्पूर्ण। पतंजलि का महाभाष्य : द्वितीय आहिनक, व्याकरण का इतिहास–(पाणिनीय व्याकरण), व्याकरण महाभाष्य (प्रथम आहिनक) भर्तृहरि–वाक्यपदीय–प्रथमकाण्ड, नागेजिभट्ट–परमलघुमंजूषा –तातपर्यनिरूपणान्त,